ʿआत्मनिवेदन्न

< बंधस्वामित्व विचय नामक यह आठवीं पुस्तक है । इसे आठवा भाग यह संज्ञा मुद्रित भागों की अपेक्षा दी गई है । मुख्यत: इस अनुयोग द्वार का निकास अग्रायणीय पूर्वसे हुआ है । क्योंकि अग्रायणीय पूर्व के १४ वस्तु अधिकार है । उनमें पांचवे अर्थाधिकारका नाम चयलब्धि हैं । उसके प्राभृत संज्ञक वीस अर्थधिकार है । उनमेंसे चौथे प्राभृत का नाम कर्मप्रकृति प्राभृत है । उस कर्म प्रकृति प्राभृतके कृति, वेदना, स्पर्श, आदि २४ प्राभृत प्राभृत संज्ञक अनुयोग द्वार है । उनमें छठे बन्धन नामक अनुयोग द्वारके चार भेद है । १ बन्ध २ बन्धक ३ बन्धनीय ४ बन्धविधान । उनमेंसे बन्ध नामका अनुयोग द्वार जीव और कर्मका असद्भूत व्यवहार नयकी अपेक्षा अनादिकालसे बन्ध चला आ रहा है । इस तथ्यकी प्ररुपणा करता है । बन्धक नामक अनुयोग द्वार ११ अनुयोग द्वारोंके द्वारा बन्धक की प्ररुपणा करता है । बन्धनीय नामक अनुयोगद्वार २३ प्रकारकी वर्गणाओंसे कौन वर्गणा बन्धयोग्य है । और कौन वर्गणा बन्ध योग्य नहीं है। इस योग्यता वाले पुद्गलद्रव्यकी प्ररुपणा करता है । जो चौथा भेद बन्ध विधान है । वह प्रकृति-स्थिति अनुभाग-प्रदेश बन्धके भेदसे चार प्रकारका हैं । उनमेंसे प्रकृति बन्धके मूल और उत्तर प्रकृति बन्ध ये दो भेद है । उनमेंसे उत्तर प्रकृति बन्धके २४ अनुयोग द्वारोमें एक बन्धस्वामित्व नामका जो अनुयोगद्वार है उसीकी बन्ध स्वामितत्व विचय यह संज्ञा है । वह प्रवाह की अपेक्षा अनादिनिधन है । इस प्रकार इस अनु-योग द्वारमें उत्तर प्रकृतियोंके बन्धस्वामित्वका विचार मुख्यरुपसे किया गया है । >

< किन्तु इस अनुयोग द्वारमें जो मूल सूत्र है वे सब देशामर्शक है । इसलिए इसमें २३ पृच्छाएं और गृहीत हो जाती है । वे २३ पृच्छाएं इस प्रकार है । >

< १) क्या बन्धकी पहले व्युच्छित्ति होती है ? २) क्या उदयकी पहले व्युच्छित्ति होती है ? ३) क्या दोनोंकी साथमें व्युच्छित्ति होती है ? ४) क्या इन प्रकृतियोंका सोदय बन्ध होता है ? ५) क्या परोदय बन्ध होता है ? ६) क्या स्व-परोदय बन्ध होता है ? ७) क्या इन प्रकृतियोंका सान्तर बन्ध होता है ? ८) क्या निरन्तर बन्ध होता है ? ९) क्या सान्तर निरन्तर बन्ध होता है ? १०) क्या इन प्रकृतियोंका स्वप्रत्यय बन्ध होता है ? ११) क्या प्रत्ययके विना ही इनका बन्ध होता है ? १२) क्या विवक्षित गतिबंधके साथ इनका बन्ध होता है ? १३) क्या विवक्षित गतिबन्धके साथ इनके बन्धका नियम नहीं है ? १४) कौन गतिके जीव इनके बन्धके स्वामी है ? १५) क्या गतिके स्वामिका

कोई नियम नहीं है ? १६) क्या किस गुणस्थानसे किस गुणस्थान तक इनका बन्ध होता है ? १७) क्या अन्तसमयमें इनकी बन्ध व्युच्छित्ति होती है ? १८) क्या प्रथम समयमें इनकी बन्ध व्युच्छित्ति होती है ? १९) क्या अन्तिम तथा प्रथम समयको >

< टीप - १ तत्थ बंधो णाम जीवस्स कम्माणं च संबंधं णयमस्सिदूण परुवेदि ।। पृष्ठ २. >

< छोडकर इनकी बन्ध व्युच्छित्ति होती है ? २०) क्या इन प्रकृतियोंका बन्ध सादि है ? २१) क्या इनका बन्ध अनादि है ? २२) क्या इनका बन्ध ध्रुव है ? २३) क्या इनका बन्ध अध्रुव है ? २४) इस प्रकार तेईस प्रश्नोंका देशामर्शक रुपसे इस भागमें समाधान किया गया है । >

< इस संबंधकी तालिका इस भागके विषय परिचयमें दी है, इसलिये उनका समाधान विषय परिचयसे हो जाता है । >

< यहां प्राकृतमें इस आठवें भागका दूसरी बार संपादन किया गया है । उसके विषयमें जिन बातोंका खुलासा करना यहां इष्ट है उस पर प्रकाश डालनेका प्रयत्न करेंगे । >

< बात यह है कि इस भागके प्रथम बार मुद्रण होनेपर इसमें जो त्रुटियां रह गई थी उनकी और सर्व प्रथम ध्यान आदरणीया आर्यिका विशुध्दमती माताजीका गया । जबतक मैने अस्वस्थ होकर चारपाईका सहारा नहीं लिया, तबतक उनकी ओरसे मेरे साथ पत्रव्यवहार होता रहा । इसकेबाद वह छुट गया । >

< पर सबसे अधिक सौभाग्यकी बात यह है कि सहारनपुर निवासी स्व. बाबु रतन-चन्दजी मुखतार भी धवलाजीके स्वाध्याय करनेमें इतने अधिक सत्तावधान थे कि उन्होने धवला-ग्रंथराजके विषयको यथासंभव आत्मसात् कर लिया था । सौभाग्यसे उनके छोटेभाई बाबू नेमीचन्दजी वकील साब अपने बीचमें मौजूद है । उन्होने भी उनके साथ बैठकर धवलाजीका स्वाध्याय किया है । स्व. ब्र. रतनचन्दजीकेसाथ भी पू. माताजी की ओरसे पत्र व्यवहार होता था । इसलिये उन्होने इस भागमें जो संशोधन किये थे वे सब माताजीको प्राप्त हो गये थे । सिध्दान्त शास्त्री पं. जवाहरलालजी भिण्डर वालोंने भी ब्रह्मचारीजी के साथ संपर्क साध लिया था । इसलिये उन संशोधन को प्राप्त करनेमें उनका भी बहुमोल सहयोग रहा है । इस प्रकार इस भागके द्वितीय संशोधित संपादनमें ताडपत्रिवोंकी प्रतियोंके साथ साथ उक्त प्रकारसे प्राप्त हुई संशोधनोंका भी उपयोग करके इस भागका संपादन किया गया है । >

< यहां इस मुख्य बातका उल्लेख करना आवश्यक है कि ताडपत्रीय प्रतियोसे हमे जो संशोधन प्राप्त हुये है उनमे कुछ छूट है या धवलाजीमें वे बुध्दिपूर्वक नहीं लिये गये है । क्योंकि

बन्ध-उदय प्रक्रियाके अनुसार वे सहज सिध्द हो जाते है । इसलिये मूलटीका में उनकी अविवक्षा की गई है । >

< फिर उन पाठोंको हम यहां प्रकाशित करना चाहते है, जो ताडपत्रीय किसी भी प्रतिमें नहीं पाये जाते ।

< वे विशेष पाठ इस प्रकार है -- >

पृष्ठ पंक्ति मुद्रित पाठ विशेष पाढ

< १३१ ५ च बन्धंति बन्धंति णवरि मिच्छाइठ्ठी सासणे उच्चागोदं णिरय तिरिक्खगई चमोत्तूण दुगदि संजुत्तं बंधंति । जसगित्ति णिरयगइ मोत्तूण तिगदि संजुत्तं बंधति ।

१९९ १ तस x

२०६ १० णत्थि। अवसेसाणं णत्थि । पंचिंदियजादि तेजा कम्मइयसरीर सम-चउरस संठाण, गंध-रस-फास अगुरुअलहुव-उवघाद-परघाद-उस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्ति-णिमिण-उच्चागोद-पयडीणमेत्थ उदयवोच्छेदो णत्थि । उवरि तदुवलंभादो ।

केवल मेत्थ बंधवोच्छेदो चेव । अवसेसाणं

२०७ ६ अप्पसत्थ विहायगइ x

२४८ २ अभावादो । अभावादो ।इत्थिवेदं तिगइसंजुत्तं बंधंति । णिरय-गईए बंधाभावादो ।

२७४ २ संजुत्तं बंधंति। संजुत्तं बंधंति थीणगिध्दितिय अणंताणुबंधिचउक्काणं मिच्छाइट्ठी चउगइसंजुत्तं, इत्थिवेदं सासणसम्माइट्ठी तिगइ संजुत्तं बंधंति । णिरयगइए अभावादो । इत्थिवेदं

२९४ १० णिमिणस्स धुवबंधीणं >

< इस संशोधित प्रतिमें जो संशोधन दिये है वे यहां अलगसे आगे दिये है । इनके संकेत >

< अ) ताडपत्रीय अ प्रति

ब) ताडपत्रीय ब प्रति

आ) आर्यिका विशुध्दमति माताजीद्वारा भेजे गये

ज) पं. जवाहरलाल शास्त्री द्वारा भेजे गये

मु.) मुद्रित पाठ विशेष खुलासा किया है । >

< सिध्दांत शास्त्री पं. जवाहरलालजी द्वारा जो संशोधन आये है वे माताजी द्वारा भेजे हुये संशोधनोंसे मिलते जुलते है । >

< कुछ ऐसे संशोधन आये है जिन्हे अनावश्यक समझकर हमने नहीं लिये है । जैसे -

१) मुद्रित प्रति पृष्ठ १३१-४ अप्रमते के स्थानमें प्रमत्ते क्योंकि अप्रमत गुणस्थानमें आहारद्विकका प्रत्ययका निषेध विवक्षित है ।

२) पृ. १७३-३ मनुष्यगति संयुक्त जिन प्रकृतियोंका बन्ध होता हैं उनका विधान किया गया है । इसलिये मनुष्यगति पदको अलगसे ग्रहण नहीं किया हैं । इसी प्रकार अन्यत्र भी कहीं ऐसी बात आई हो तो वहां भी इसी न्ययासे समझ लेना चाहिये ।

३) पृ. १६८-८ तिर्यग्गति और मनुष्यगतिको अलगसे ग्रहण नहीं किया है । क्योंकि इन दोनो पदोंको बन्ध स्वोदयसे भी होता है ।

४) पृ. १८२-२० उदय होता है, इसके स्थानमें उदयके साथ उसके बन्धका विरोध हैं यह संशोधन आया है ।

५)ताडपत्रीय प्रति अ ब मे पृ. १९९ केआधारसे कोई संशोधन नहीं किया है । मात्र (आ) आर्यिका विशुध्दमती माताजीने जो संशोधन भेंजा है उसकेआधारसे दस पदभूलसे रह गया है, हिंदीमे किया है।

६) पृ. २१६-७ मणुसगइ पद दोबार आगया है । उसको अलग कर दिया है । >

< अंतमे इस भागके प्रूफ संशोधनमें जीवराज ग्रंथमालाके व्यवस्थापक पं. नरेन्द्र - कुमारजी शास्त्री इनका सहयोग रहा है । >

< इस प्रकार संक्षेपमे आत्मनिवेदनका सार है । >

< संपादक >

ʿपं. फूलचंद शास्त्री